समझता है कि वह अब जीव नहीं रहा, ईश्वर हो गया है। वह इतना बुद्धिहीन है कि यह भी नहीं समझता कि यदि वह ईश्वर होता तो संशय कैसा ? उसे यह विचारना चाहिए। अतएव अपने को ईश्वर मानना माया का सर्वोपरि पाश है। माया से मुक्त होने का अर्थ वास्तव में भगवान् श्रीकृष्ण के तत्त्व को जानकर उनकी आज्ञानुसार कर्म करना है। इस श्लोक में **मोह** शब्द अज्ञान का वाचक है। सच्चा ज्ञान तो यह जानना है कि जीवमात्र श्रीभगवान् का नित्यदास है। परन्तु यह समझने के स्थान पर, जीवात्मा अपने को दास नहीं मानता; प्राकृत-जगत् का स्वामी ही समझता है। इस कारण वह प्रकृति पर प्रभुत्व करना चाहता है। यही उसका संमोह है। श्रीभगवान् अथवा उनके शुद्धभक्त की कृपा से इस मोह को जीता जा सकता है। मोह-आवरण के हटते ही जीव कृष्णभावनाभावित कर्म के परायण हो जाता है।

कृष्णभावना का अर्थ श्रीकृष्ण की आज्ञा के अनुसार कर्म करना है। प्रकृति रूप बहिरंगाशक्ति से मोहित बद्धजीव नहीं जानता कि श्रीभगवान् सब के स्वामी, सम्पूर्ण ज्ञानमय तथा सारी सृष्टि के स्वामी हैं। वे अपनी इच्छा के अनुसार भक्तों पर कृपा करते हैं। वैसे तो वे सभी के सखा हैं; परन्तु विशेष रूप से भक्तवत्सल है। वे प्रकृति, जीव और काल के ईश्वर हैं तथा सम्पूर्ण दिव्य ऐश्वर्यों और शक्तियों से परिपूर्ण हैं। अपने भक्तों को तो भगवान् आत्मदान तक कर सकते हैं। उन्हें न जानने वाला निश्चित रूप से माया-मोह के आधीन है। वह भक्त नहीं बनता, अपितु माया का ही दास बना रहता है। परन्तु अर्जुन तो श्रीभगवान् से गीता का श्रवण करके सम्पूर्ण मोह से मुक्त हो गया है। वह जान गया है कि श्रीकृष्ण उसके सखा ही नहीं हैं, वरन् भगवान् हैं। भाव यह है कि वह श्रीकृष्ण के तत्त्व को समझ गया। अतः सिद्ध होता है कि भगवद्गीता का स्वाध्याय करना श्रीकृष्ण को तत्त्व से जानना है। पूर्ण ज्ञानी पुरुष स्वाभाविक रूप से श्रीकृष्ण के शरणागत हो जाता है। इसी प्रकार जब अर्जुन ने जाना कि श्रीकृष्ण अप्रयोजनीय भू-भार को हरना चाहते हैं, तो वह उनकी इच्छापूर्ति के लिए युद्ध करने को सहमत हो गया। श्रीभगवान के आज्ञा-पालन के लिए उसने अब फिर से अपना धनुष-बाण उठा लिया है।

सञ्जय उवाच।
इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः।
संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम्।।७४।।

सञ्जयः उवाच=संजय ने कहा; **इति**=ऐसा; **अहम्**=मैंने; **वासुदेवस्य**=भगवान् श्रीकृष्ण का; **पार्थस्य**=अर्जुन का; **च**=तथा; **महात्मनः**=दोनों महात्मा पुरुषों का; **संवादम्**=वार्तालाप; **इमम्**=इस; **अश्रौषम्**=सुना; **अद्भुतम्**=विस्मयकारी; **रोमहर्षणम्**=रोमांचकारी।

अनुवाद

संजय ने कहा, इस प्रकार मैंने दोनों महात्माओं, श्रीकृष्ण और अर्जुन के इस